जमाअत बनाना

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{1} अबू दाउद, की रिवायत का खुलसा:- हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत है की रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जब तीन आदमी सफर को निकलें तो उन्को चाहिए की वो अपने मै से किसीको अमीर बना लें. शैखुल इस्लाम इबने तैमिया (रह) फरमाते है की जब सफर की हालत मै लोगों पर जमाअत बनाना फर्ज किया गया तो ये बात और ज्यादा ज़रूरी होगी की ईमान वाले एक जमाअत की शक्ल अपनाए जबकि उन्का जमाअती निज़ाम बिगड गया हो, मुसलमानों के लिए जाइज़ नहीं है की अकेले ज़िन्दगी गुजारें.

{2} मुन्तका की रिवायत का खुलसा:-

अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल आस से रिवायत है की रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की तीन आदमी जो किसी जंगल मै रहते हों उन्के लिए जाइज़ नहीं है मगर ये की वो अपने मै

से किसीको अपने उपर अमीर बना लें.

{3} मुसनद अहमद, मिश्कात, की रिवायत का खुलसा:- हज़रत मुआज बिन जबल से रिवायत है की रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जिस तरह बकरियों का दुश्मन भेडिया है और अपने रेवड से अलग हो जाने वाली बकरियों का आसानी के साथ शिकार कर लेता है, उसी तरह शैतान इन्सान का भेडिया है अगर लोग जमाअत बनाकर ना रहें तो ये उन्को अलग-अलग बहुत ही आसानी के साथ शिकार कर लेता है. तो ऐे लोगो पकडंडियों पर मत चलना, बल्कि तुम्हारे लिए ज़रूरी है की जमाअत और आम मुसलमानों के साथ रहो". "जमाअत के साथ रहो" ये उस वकत का हुक्म है जब मुसलमानों की "अल जमाअत" मौजूद हो, और अगर मौजूद ना हो तो क्या हो? ये बडा अहम सवाल है और उस्का सीधा साधा जवाब ये है की जमाअत बनाओ ताकि "अल जमाअत" वुजूद मै आए. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जो शख्स जन्नत के बीच मै अपना घर बनाना चाहता है, उसे "जमाअत से" चिमटे रहना चाहिए, इसलिए की शैतान एक आदमी के साथ होता है, और

जब वो दो हो जाए तो वो दूर हो जाता है. अगर मुसलमानों की “अल जमाअत” मौजूद हो. तो उस्से चिमटे रहना जरूरी है उस वकत उस्से अलग रहना जाइज़ नहीं है. “अल जमाअत” से मुराद वो हालत है जब इस्लाम गालिब हो, हुकूमत उस्के हाथ मै हो, और ईमान वाले एक अमीर की सरदारी और रहनुमाई पर एक साथ हों, ऐसे वकत मै किसी के लिए जमाअत से अलग ज़िन्दगी गुजारना जाइज़ नहीं है और जब “अल जमाअत” मौजूद ना हो, तो जमाअत बनाकर ऐसे ढंग से दीन का काम करना होगा की “अल जमाअत” वुजूद मै आ-जाए.